BOMRIM

Bulletin on Microvita Research and Integrated Medicine

Official Bulletin of Society for Microvita Research and Integrated Medicine (SMRIM)

(Registered under Societies Registration Act 28, 1958 (Raj.) No. 73/UDR/08-09)

Vol. 2 No. 2 www.microvitamedresearch.com August 2010

श्रावणी पूर्णिमा अंक

देववृक्ष – सेमल विशेषांक

✍ सम्पादकीय

सेमल - परमसत्ता का मानवता को अवदान

पादपों ने आदिकाल से ही मानव, जीव–जन्तुओं और पर्यावरण के भरण–पोषण, संरक्षण और उत्थान के लिये अपना जीवन उत्सर्ग किया है। उन्होनें मनुष्य की भौतिक, भौतिक–मानसिक तथा मानसाध्यात्मिक उन्नति में योगदान दिया है तथा सृष्टि की प्रतिसंचर धारा की गति को त्वरित करने में अपना सर्वस्व लुटा दिया है।

परम चैतन्य सत्ता के दिशा–निर्देशों पर चलने वाली पादप सत्ता आज भी सम्पूर्ण रूप से सृष्टि के कल्याण में रत है। आज भी उनके गुणों से मनुष्य बहुत कुछ सीख सकता है। कवि कहते है 'तृणादपि सुनिचेन, तरोरूह सहिष्णुता' अर्थात् घास की पत्तियों की भाँति विनम्र, जो इतने गुणों से भरपूर होते हुवे भी सदा झुकी रहती है और वृक्षों की तरह सहिष्णु होना चाहिये जो अपनी छाया सभी के लिये समान रूप से देते है– ऐसी विनम्रता और सहिष्णुता व्यक्ति में होनी चाहिये।

दुःख के साथ कहना पड़ता है कि मनुष्य ने निजि स्वार्थवश, संकीर्ण ''मानवता'' की मानसिकता के नाम पर इन पर बहुत अत्याचार किए हैं। हमें मानवता की सोच के दायरे को ओर अधिक विस्तृत करना होगा ताकि हमें मनुष्य के अतिरिक्त सभी जीवित और निर्जिव सत्ताओं को भी सर्वात्मक कल्याण की धारा में समेटना होगा, तभी होगा नव्य–मानवतावाद तभी होगा इस पृथ्वी के अणु, परमाणु और माइक्रोवाइटा का विकास– हर जीव का कल्याण हर निर्जीव सत्ता की गति का त्वरण। इस परिप्रेक्ष्य में सेमल वृक्ष की चर्चा अतिश्योक्ति नहीं होगी जो मानव सभ्यता के उषा काल से ही नव्य–मानवतावादी कल्याण में रत है।

ऋग्वैदिक काल से ही सेमल की चर्चा सभी धर्म ग्रन्थों, वैद्यक और आयुर्वेदिक शास्त्रों में मिलती है। कवियों ने इसके रक्तवर्णीय पुष्पों पर बहुत कुछ लिखा है। श्री प्रभात रंजन सरकार ने तो अपने 5018 गीतों में से 31 गीतों में इसका उल्लेख किया है। इस आध्यात्मिक वृक्ष की गणना पंचवटी के पाँच वृक्षों में होती है जो धनात्मक माइक्रोवाइटा का घनीभूत स्थल है और जिसका परिवेश मानसाध्यात्मिक साधना करने में सहायक सिद्ध होता है।

सेमल का प्रत्येक अंग औषधीय रूप से मनुष्यों और पशुओं की बीमारियों के उपचार में प्रयुक्त होता है। कई व्यवसाय इस पर आधारित है और यह कई कीट पतंगों और पक्षियों का आश्रय स्थल है। पर्यावरण सन्तुलन में इसकी भूमिका बेजोड़ है। इतना ही नहीं, कई जन जातियों तथा शहरों में भी यह घर की चारदीवारी के भीतर रह कर परिवार का अंग बना हुआ है। यह वृक्ष हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन में भी रच बस गया है।

कहना न होगा कि सेमल हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। कोई भी व्यक्ति अकारण अपने इस मूल्यवान जीवन साथी को अकाल मृत्यु के मुख में भस्मीभूत कर किस शुभ चेतना को पाना चाहेगा? संकीर्ण मानसिकता की बेड़ियों को तोड़ कर, भाव जड़ता को अग्निसात कर, नव्य–मानवतावाद के नूतन आलोक में इस प्रकृति प्रदत्त, परमचैतन्य सत्ता के अवदान को हमें संजो कर रखना होगा, अपने लिये, भावी पीढ़ी के लये और भौतिक –मानसिक–आध्यात्मिक पर्यावरण की सुरक्षा के लिये।

– डॉ. एस. के. वर्मा

धनात्मक माइक्रोवाइटा संपन्न बहुद्धेश्यीय सेमल वृक्ष

– डा. वर्तिका जैन

विश्व में सूक्ष्मदर्शीय पादपों से लेकर विशाल वृक्षों की असंख्य प्रजातियां विद्यमान है और प्रत्येक पादप प्रजाति, परमपुरूष द्वारा दी गई एक सर्वोतम नव्यमानवतावादी भेंट है। पृथ्वी का अस्तित्व पौधों से निकलने वाली ऑक्सीजन पर निर्भर करता है। प्रत्येक हरा पौधा पारिस्थितिकी तंत्र की आधारभूत इकाई है। प्राथमिक उत्पादक के रूप में खाद्य श्रृंखला का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग हरे पौधे है जिनके ऊपर न केवल अन्य पादप प्रजातियाँ वरन् सभी जीव–जन्तु एवं मनुष्य भी निर्भर करते हैं।

इन्हीं विशाल वृक्षों की श्रृंखला में 'सेमल वृक्ष' एक महत्त्वपूर्ण बहुद्धेशीय वृक्ष है जिसका विस्तार सम्पूर्ण विश्व में ऊष्ण एवं शीतोष्ण कटिबंधीय एशियाई देशों, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया व अमेरिका तक है। सेमल वृक्ष को इसके सुंदर रक्तवर्णी पुष्पों एवं बड़े आकार के कारण ही ''जंगल के राजा'' की संज्ञा दी गई है।

विश्व की प्राचीनतम भाषा संस्कृत में इसे दो सौ से भी अधिक नामों से अलंकृत किया गया है जिनमें कुछ उल्लेखनीय नाम है दीर्घायु, यमद्रुमा, तूलिनी, कुक्कुटीः, दीर्घद्रुमाः रम्यपुष्पः, निर्गन्धपुष्पी, पंचपर्णी, कण्टकद्रुमा, शाल्मलि इत्यादि। वैज्ञानिक भाषा में इसे 'बोम्बेक्स सीबा' नाम से जाना जाता है जो बोम्बेकेसी कुल का सदस्य है।

इस वृक्ष की ऊँचाई 40 मीटर तक होती है। सीधा तना, तीक्ष्ण कांटे, क्षैतिज रूप से समान्तर फैली हुई शाखाऐं और मनुष्य की हथेली के समान पाँच पत्तियाँ इसकी मुख्य पहचान है जो इसे अन्य सभी वृक्षों से अलग करती है। भारत वर्ष में यह वृक्ष रेतीले इलाकों के अलावा सर्वत्र मिलता है। इसके फूल प्रत्येक वर्ष जनवरी से मार्च के बीच खिलते है और अप्रैल में इसके डोड़े पकने पर रेशमी रूई के साथ ही बीजों की प्राप्ति होती है। जून के प्रथम–द्वितीय सप्ताह में प्रथम वर्षा के आगमन के साथ ही इसके बीजों को बोया जाता है जो उपयुक्त नमी व तापमान के चलते एक सप्ताह में अंकुरित हो जाते हैं। सेमल का पौधा कम पानी में भी जिंदा रह सकता है। इसे पहाड़ी ढलानों व तालाबों के किनारे लगाया जाता है।

सेमल–महत्वपूर्ण पादप प्रजाति

मानव सभ्यता के उषाकाल से ही सेमल वृक्ष ने मानव जीवन के हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है। भौतिक वस्तुऐं, सामाजिक प्रथाऐं, लोकगीत, विभिन्न औषधियाँ, पर्यावरण संतुलन से लेकर मनुष्य के आध्यात्मिक उत्थान तक हर स्तर पर यह वृक्ष अपना योगदान देता आया है।

शाल्मलिश्चिरजीवी स्यात् पिच्छिलो रक्तपुष्पकः।
कुक्कुटीः तूलवक्षश्च मोचाख्य कण्टकद्रुमः।।
रक्तफलो रम्यपुष्पो बहुवीर्यो यमद्रुमः।
दीर्घद्रुमः स्थूलफलो दीर्घायुस्थितभिर्मतः।।
(राजनिघण्टु)

आध्यात्मिक महत्त्व

सेमल को देववृक्ष एवं नक्षत्र वृक्ष के नाम से जाना जाता है। ज्येष्ठ नक्षत्र में जन्में जातक इसकी पूजा करते हैं। इस वृक्ष का उल्लेख ऋग्वेद, महाभारत, गुरूग्रंथ साहब, निघण्टु रचित चिकित्सा ग्रंथों में भी मिलता है। इसके साथ ही सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि 'पंचवटी', जो धनात्मक माइक्रोवाइटा का घनीभूत स्थल है, उसके पाँच महत्त्वपूर्ण वृक्षों में से सेमल भी एक है एवं पंचवटी वह स्थल है जिसके नीचे बैठकर ऋषि–मुनि आध्यात्मिक साधना किया करते थे और धनात्मक माइक्रोवाइटा को आकर्षित कर पंचवटी के वृक्ष मानसाध्यात्मिक साधना में उनकी सहायता करते थे।

औषधीय महत्त्व

सेमल वृक्ष का प्रत्येक अंग औषधीय गुणों से परिपूर्ण है। भारत में मिलने वाली कई जनजातियाँ इस वृक्ष को अपनी और अपने पशुओं की कई बीमारियों के उपचार के लिए उपयोग में लेती है। आयुर्वेद में भी इसका उल्लेख कई रोगों के निदान के लिए किया गया है।

जड़ :– सेमल की जड़ मूसला मूल होती है और सामान्यतया इसे 'सेमल मूसली' के नाम से जाना जाता है। यह कैल्शियम व प्रोटीन से भरपूर होती है। इसका उपयोग मनुष्य में मधुमेह, हृदयरोग, नपुसंकता, दुर्बलता, श्वेत प्रदर, दस्त–पेचिश आदि रोगों में किया जाता है। हाल ही में भारत में किये गये वैज्ञानिक अनुसंधान में इसकी जड़ में कुछ नये औषधिय गुणों का पता चला है, जो मधुमेह व हृदयरोग में इसकी उपयोगिता को प्रमाणित करते हैं। इनमें प्रमुख है, मधुमेह रोगियों के रक्त में शर्करा और वसा की मात्रा को कम करना तथा हृदय रोगियों में रक्त के थक्के घुलने की प्रक्रिया को त्वरित करना, शरीर के लिये लाभकारी एण्टीआक्सीडेण्ट स्तर को बढ़ाना तथा खून में हानिकारक कॉलेस्ट्राल की मात्रा को कम कर इन रोगों के रोकथाम में सहायता करना।

तना :– इसके तीक्ष्ण, अनाकर्षक काँटों से चेहरे को आकर्षक बनाने की औषधि मिलती है। इसकी छाल को उदर रोगों, मुँह के छालों, किडनी पथरी, सिरदर्द, दुर्बलता, हृदय रोगों को दूर करने के लिये आदिवासियों द्वारा उपयोग में लिया जाता है। वर्ष 1968 में भारत में हुई वैज्ञानिक शोध के अनुसार इसकी छाल रक्त में शर्करा के स्तर को भी नियंत्रित करती है। वर्ष 1992 में कोरिया के वैज्ञानिकों ने इसमें यकृत को मजबूत करने के साथ ही सूजन कम करने के गुण को भी देखा है। पाकिस्तान के वैज्ञानिक दल ने वर्ष 2003 में इसमें ब्लड प्रेशर नियंत्रण के गुण का पता लगाया है।

पत्तियाँ :–इसकी पत्तियाँ प्रोटीन से भरपूर होती है जिसे मवेशियों के चारे के लिए उपयोग में लिया जाता है। साथ ही प्रदर, मधुमेह, गठिया, रक्ताल्पता, पेचिश आदि रोगों के लिए भी इसे उपयोगी बताया गया है। पाकिस्तान के वैज्ञानिकों ने इसमें रक्तचाप व मधुमेह नियंत्रण के साथ ही एण्टी–आक्सीडेण्ट, दर्द निवारक और यकृत संरक्षी गुणों का पता लगाया है।

पुष्प :– इसके रक्त पुष्पों को रक्ताल्पता, खूनी बवासीर, गोनोरिया, श्वेत व रक्तप्रदर, मासिकधर्म संबंधी रोग, घावों और छालों, कोलाइटिस, आंतरिक रक्तस्राव व बढ़ी हुई तिल्ली को कम करने के लिए प्रयोग में लिया जाता है। वैज्ञानिक शोध के अनुसार इसमें ब्लडशुगर, ब्लडप्रेशर नियंत्रण के साथ ही एण्टीआक्सीडेण्ट गुण भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। इसकी कलियों को सब्जी बनाकर भी खाया जाता है।

फल :– इसके कच्चे फलों को प्रदर, मुत्राशय व किडनी की पथरी, गर्भाशय स्थानचुत्य आदि रोगों को दूर करने के लिए प्रयोग में लिया जाता है। वैज्ञानिक शोध के अनुसार सेमल के सभी अंगों में रक्तचाप नियंत्रण की क्षमता होते हुए भी सर्वाधिक क्षमता इसके फलों में मिलती है।

गोंद :– इसके तने से निकलने वाले गोंद को मोचरस कहा जाता है। औषधीय रूप से इसे अस्थमा, दस्त–पेचिश, खूनी बवासीर आदि रोगों के लिए उपयोगी बताया गया है। साथ ही वैज्ञानिक शोधों के अनुसार इसमें एण्टीआक्सीडेण्ट और दर्दनिवारक गुण भी मिलते है।

व्यावसायिक महत्त्व

औषधीय व आध्यात्मिक महत्त्व के साथ ही इस वृक्ष का आर्थिक महत्त्व भी है। इसके फलों से निकलने वाली रेशमी रूई और बीजों के साथ इसकी लकड़ी भी व्यावसायिक रूप से उपयोगी है।

इसके बीजों से तेल निकलता है जो खाना बनाने के साथ ही साबुन बनाने व जलाने में भी उपयोगी है। इसकी रेशमी रूई को कीटरोधी व हल्की होने के कारण गद्दे–तकिये, कम्बल, रजाई, सोफें, कुशन आदि भरने के लिए प्राथमिकता दी जाती है। इसकी रूई को 110^{0} C पर निर्जमीकरण करके सर्जिकल ड्रेसिंग करने के लिये भी उपयोग में लिया जाता है। साथ ही जलने पर भी प्राथमिक उपचार के रूप में भी इसे लगाया जाता है। ध्वनिरोधी दीवारें, अग्निरोधी उपकरण बनाने में भी इसका प्रयोग होता है। इसकी लकड़ी बहुत हल्की और टिकाऊ होती है जिसका सर्वाधिक प्रयोग माचिस उद्योग में किया जाता है। इसके अलावा इसे नावें, ताबूत, ब्रशहेण्डल, चम्मच, वाद्यसंयंत्र जैसे ढोलक, तम्बूरा, आदि बनाने के लिये भी उपयोग में लिया जाता है।

पारिस्थितिकीय महत्त्व

पर्यावरण संतुलन के लिए भी सेमल एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी जड़ें मिट्टी को बांधकर रखती है जिस कारण इसे तालाबों के किनारे लगाया जाता है। इसके नुकीले कांटे जहाँ इसे अन्य जानवरों से सुरक्षा प्रदान करते है वहीं मनुष्य इसे अपने खेतों के चारों

ओर लगाकर मेड़ बनाते है और खेतों को सुरक्षा देते है।

सेमल एक अग्निप्रतिरोधक वृक्ष भी है जिसे जंगलों में आग फैलने से रोकने के लिये लगाया जाता है। साथ ही बंजर भूमि को ऊर्वर बनाने के लिये भी इस वृक्ष प्रजाति को सर्वप्रथम उपयोग में लिया जाता है। इसके सूखे पुष्पों और पत्तियों से बनी खाद उत्कृष्ट कोटि की वर्मीकम्पोस्ट खाद बनाती है जिसे वैज्ञानिक शोध में प्रमाणित किया गया है।

इसके बड़े–बड़े वृक्षों को मकानों और कार्यस्थलों के पास लगाकर वातावरण को ठंडा किया जाता है। इस संदर्भ में दक्षिण फ्लोरिडा, यू.एस.ए. में हुई शोध के अनुसार उच्च शुष्क प्रतिरोधी व घनी पत्तियों के कारण सेमल एक महत्त्वपूर्ण वृक्ष है जिसे वातावरण को ठंडा करने के लिए उपयोग में लिया जा सकता है। विशाल शाल्मलि वृक्ष कई जीव–जंतुओं का आश्रयस्थल भी है। कई चिड़ियायें जैसे कॉपरस्मिथ, गरूड़, गिद्ध आदि अपने घोंसले इस वृक्ष पर बनाते हैं। मधुमक्खियों के लिये भी इसके मकरंद से परिपूर्ण पुष्प आकर्षक स्रोत है, इसलिये मधुमक्खियों के बड़े–बड़े छत्ते भी इस वृक्ष पर देखे जा सकते है। इसके अतिरिक्त बंदर, गिलहरी, बुलबुल, मोर, कौआ, बकरी, हिरण इत्यादि इसके ताजे फूलों को भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं।

सामाजिक – सांस्कृतिक महत्त्व

सेमल वृक्ष जनजीवन की कई प्रथाओं में भी घुला हुआ है और उनके जीवन का एक अभिन्न अंग है। राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में इस विशाल कंटीले वृक्ष पर नेजा बांधकर उसे उतारने की कष्टदायी प्रतियोगिता रखी जाती है। वहीं ये अपने घरों में मुर्गी का घोंसला भी सेमल पर बांध देते है ताकि बिल्ली इस कंटीले वृक्ष पर चढ़ न सके और मुर्गी के बच्चे सुरक्षित रह सकें। इसी तरह आदिवासी बच्चे इसके बड़े–बड़े असंख्य पुंकेसरों से खेलते है। राजस्थान के गरासिया आदिवासियों में यह वृक्ष एक लोकगीत ''हेमलो रोप लो रे....'' के रूप में प्रसिद्ध है। इस गीत में प्रकृति के माध्यम से सेमल वृक्ष लगाकर अपने माता–पिता की तरह उसकी सुरक्षा करने की अपील की जाती है।

दक्षिण राजस्थान के भील, गरासिया, मीणा जनजातियों में प्रतिवर्ष सेमल वृक्ष को भक्त प्रहलाद का रूप मानकर होली पर जलाने की प्रथा भी प्रचलित है जिसके चलते हर वर्ष होलिका दहन पर हजारों की संख्या में इसकी कटाई हो जाती है। सोसायटी द्वारा चलाए जा रहे सेमल संरक्षण अभियान के अन्तर्गत जनजागरण और बीजों से सेमल प्रवर्धन से इसके संरक्षण में सहायता मिली है। इस संदर्भ में बीजों से सेमल के पौधों को परिवर्धित कर विभिन्न स्थानों पर प्रत्यारोपण सोसायटी द्वारा उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम है, जो उदयपुर शहर में प्रथम बार हुआ है।

उपसंहार

सेमल की बहुपयोगिता को देखते हुए यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि सेमल ने हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है। भौतिक सुख–सुविधाओं, मानसाध्यात्मिक उत्थान, सामाजिक क्रियाकलाप और सांस्कृतिक क्षेत्रों को भी इसने अपने स्पर्श से झंकृत किया है। सेमल जैसे महत्वपूर्ण वृक्ष के प्रति संवेदनशील होकर इसकी रक्षा करना, नये वृक्षों को लगाना और औषधीय गुणों पर अनुसंधान करना क्या हमारा कर्तव्य नहीं है?

''मानवता को वरदान है सेमल
हर घर में हो एक सेमल''

देववृक्ष सेमल

सेमल का इतिहास पुराना,
ऋग्वेद ने भी ये माना।
दो सौ से ज्यादा है नाम,
मानवता को मिला अवदान।
देववृक्ष भी सेमल का नाम,
पंचवटी में मिला स्थान।
ज्येष्ठ नक्षत्र का वृक्ष दुलारा,
देता रेशा, ईंधन, चारा।
सेमल की रूई रेशम जैसी,
हल्की, कोमल कीट निरोधी।
रूई दूर करती जलन,
भर लो कंबल, तकिये, कुशन।
सेमल की लकड़ी मजबूत,
बनती माचिस, नाव, ताबुत।
सेमल पत्ती प्रोटीन का स्रोत,
देती बढ़िया वर्मीकम्पोस्ट।
सेमल की हर बात निराली,
सेमल फूल मधु की प्याली।
बंदर, बकरी, मोर, बुलबुल,
सब खाते सेमल के फूल।
सेमल के हैं बहुत उपयोग,
फिर क्यों वंचित होवे लोग।

डा. वर्तिका जैन

YOGA PSYCHOLOGY AND SCIENCE OF MICROVITA

- Dr. S.K. Verma

The world is fastly moving towards Supreme desideratum, from physicality to intellectuality and in the near future this intellectuality will surely be transformed into spirituality. We are at present passing from physicality to the intellectual age and for the attainment of the age of spirituality, spiritual practices are must. The spiritual discipline, the process of meditation, the vibration of kiirtan and the service to suffering humanity with imposition of Na`ra`yanahood have to be accelerated. The science of bio-psychology, the science of Yoga psychology and the science of microvita have to be integrated to bring the golden age of spirituality on this earth.

According to the Yoga psychology, the role of cakras or plexii (glands and sub glands) is immense in spiritual practices. The cakra or plexus is a collection of glands and sub glands situated at different parts of the body and the location differs from animal to animal. In fact, the development, the complexity and intricacy of these glands and sub glands determine the evolutionary status of the animal and the capacity or capability of living being to perform sa`dhana`. It is obvious that the minimum requirement to do meditation is to have a human body, the body with intricate network of nerves and highly developed endocrine glandular system. That is why with few exception, most of the animals cannot perform the psycho-spiritual practice.

Cakra or plexus

In human body, the cakras are situated at the intersecting point of three subtle energy channels- the ida`, su`sumna` and pingala`. As these are subtle energy channels, they cannot be visualized, they cannot be identified by dissection, however they can be located psychologically and felt as any other energy. The concept is subtle and psychic, however to some extent; cakras can be correlated to the corresponding endocrine glands present in the body as confirmed by medical science. The arena of actional faculty of cakra is larger than the known endocrine glands. In fact the most important aspect of spiritual practice is the purification and control of these cakras – the site of expression of human propensities.

Propensities, reactive momenta and cakras

Human mind is full of thought waves, constantly emerging and dissolving. Who is working behind this psychic phenomenon, making the mind at unrest? These are the propensities working behind the human mind. Furthermore, these propensities are related to the reactive momenta of human beings. The reactive momenta (Samska`ra) determine the formation of propensities, while the expression and control of these propensities depends on the cakras or glands.

With the development of human mind the number of propensities have also increased and so also the number of glands or cakras for their expression. The fifty main propensities of human mind are expressed internally or externally through the vibrational expression of these glands or cakras. These vibrations cause hormones to be secreted from the glands and the expression of the propensities, whether natural or unnatural, normal or abnormal, depend on the degree of normal or abnormal secretion on the hormones. The expression of propensities is therefore, nothing but the expression of mind. In fact the existence of mind depends on the existence of the propensities. When the propensities are destroyed, the human mind loses its existence.

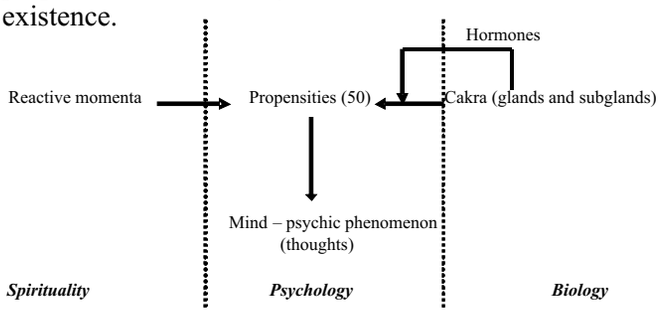

The following table gives the name of different plexii in the human body and their corresponding mandalas (circle) and number of propensities.

Table 1: Human plexii, mandalas and propensities

Cakra	Plexus	Mandala (area greater than cakra)	Number of propensities
Mu`la`dha`r Cakra	Terranian Plexus	Bhaoma Mandala	4
Sva`dhistha`n Cakra	Fluidal Plexus	Tarala Mandala	6
Manipur Cakra	Igneous Plexus	Agni Mandala	10
Ana`hat Cakra	Solar Plexus	Saora Mandala	12
Vishuddha Cakra	Sidereal Plexus	Naks`attra Mandala	16
A`jina` Cakra	Lunar Plexus	Shashi/ Candra Mandala	2
6	6	6	50

Cakras, cosmology and microvita

The original light from stars, the reflected light from the planets, the refracted light from the satellites and meteors and the light from galaxies and nebulae reflect on all the glands and sub glands of the body, especially the Ana`hat cakra. The reflecting area is somewhat bigger than the area of cakra. That reflecting area, which contains the Ana`hat cakra is called “the Solar plexus”, the Saora mandala. The microvita, positive or negative moving along with the light rays also affects the body and the 12 sub glands of this cakra. As per the theory of microvita, the microvita move through tanma`tra`s – sound, touch, form, liquid, smell, as well as with ideas. As the Ana`hat cakra is especially being affected from the

"By just sitting and doing sa`dhana`, you cannot utilized microvita for the good of humanity. You have to engage yourself in physical research. If laboratory tests go on side by side with psycho-spiritual practices, then the research will have tremendous results."

- Shrii P.R. Sarkar

cosmic reflected or refracted light and microvita, the wearing of a Ta`ntrik pratiik- a ta`ntrik vibrational figure at the level of Ana`hat cakra might be helpful in warding off the effect of negative microvita or conducive for attracting more positive microvita, thus strengthening this Cakra. However, this is the point of future research.

The igneous plexus is static and therefore, negative microvita are dominating here; while solar plexus is sentient, so the positive microvita are dominant here. Those people who have high moral standard, who are spiritual aspirant, who are in the company of good people, absorb more positive microvita and therefore, their propensities move with positive vitality. In a very spiritual person, by the dint of regular spiritual practice, all the positive propensities of Ana`hat Cakra are positively strengthened resulting in what is called the "sentient psycho-panaromic maximitis". When this knowledge, that is the science of biopsychology, the practice of yoga psychology and the art of absorbing positive microvita are acquired by a large number of people in this world they will absorb more positive microvita. This will not only benefit themselves but also the whole world.

It is worth noting that so many stars, planets and celestial bodies are influencing the solar plexus of all human beings and no one can remain unaffected from such an influence, wherever one goes. It is therefore, important to lessen the influence of negative microvita by doing regular practice of spiritual cult in order to strengthen the positive microvita. Generally positive microvita come in contact with human body through sidereal plexus of Vishuddha Cakra and negative microvita come in contact through the lower Cakras.

There are so many celestial bodies in this universe and they all have a direct contact with the glands and sub glands of the human body by throwing reflected or refracted light. But the maximum influence comes from the sun which is the nearest and biggest star to the earth. According to the ancient yogis and tantrikas, the sun's influence is via the 18 light waves which influence the solar and lunar plexii. The seven colors of the spectrum plus ultraviolet and infrared, having an internal and external influence make it 7+2=9, 9+9=18. Out of these 18, sixteen come directly from the sun while two light waves come from the moon. Each and every expression has got its vibration, its sound, that sound is called "the acoustic root". Microvita use these inferences as their media.

Positive or friendly and negative or foe microvita come through 16 sounds (16 acoustic roots of Vishuddha Cakra) from four directions to the Vishuddha Cakra and control the human body positively as well as negatively. The collective influence on the human body is effected by the reflected light of the moon, on the lunar plexus or A`jina` Cakra. The left side of the lunar plexus concerns the external influences of the moon below the nave, and the right concerns the upper portion of the body.

Human body is therefore affected by direct, reflected and refracted light from all the celestial bodies; not only of this solar system but of all other existing solar systems, stars, planets, satellites, meteorites, nebulae and galaxies. The reflected and refracted light and radiations are media of transportation of microvita from planet to planet. They affect the glands and sub-glands of living beings. There are at least 1000 glands and sub-glands in human body, their hormonal secretions modify the expression of propensities of the human mind.

The role of cakra or plexii in human body is beyond doubt. Event if any single plexus is dissociated from the body, the corporal structure will die then and there. In spiritual practice, cakras or plexii have immense role. In fact, the most important aspect of spiritual practice is the purification and control of cakra (Cakra shodhana). We have to prepare these cakras, these glands properly, so they become abode for positive microvita, abode for positive propensities. By dint of sadhana, by dint of microvitised spiritual practices, the day is not far when there will be many spiritual beings or this earth. They will be absorbing more positive microvita. The humanity will advance, dancing in the rhythm of universalism and the earth, in true sense, will become heaven.

References

1. Sarkar, P.R. 1998. Yoga Psychology. AMPS Publications, Kolkata.
2. Sarkar, P.R. 2005. Microvita in a nutshell. III ed., AMPS Publications, Kolkata.
3. Singh, J. 1998. Biopsychology-A new science of body, mind and soul. First ed. Gurukul publication, Ananda Marga, West Bengal.
4. Verma, S.K. and Jain, Vartika. 2009. Disease production-Virus or microvitum? Prout. 20(11):22-25.

"And that day will not be in the distant future, when the entire living world will become spiritual, dashing through a transitory phase of psychic."

- Shrii P.R. Sarkar

ACTIVITIES OF SMRIM

दैनिक नवज्योति

अजमेर, शनिवार, 5 जून, 2010

ध्रुव परिवर्तन : महाआपदा का आगमन

आपदा प्रबंधन कार्यशाला

आत्मा की ज्वाला मंगलवार, 3 अगस्त 2010

औषधीय पौधों का रोपण करते सोसायटी के पदाधिकारी।

औषधीय तरू रोपण

दैनिक भास्कर

माइक्रोवाइटा विज्ञान सम्मत पौधारोपण

वैश्विक जल संकट व जल संरक्षण संगोष्ठी, भीण्डर

दैनिक नवज्योति

दैनिक नवज्योति

अजमेर, गुरुवार, 22 जुलाई, 2010

वृक्षों के संरक्षण की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम

आध्यात्मिक सेमल पौधारोपण अभियान-2010

सेमल पौधारोपण, राजकीय विद्यालय, भीण्डर

औषधीय पौधारोपण, आर.एन.टी. मेडीकल कॉलेज, उदयपुर

WHAT IS MICROVITA ?

Microvita : Micro- Small, Vita- Living

Definition : Entities or objects which come within the realm of both physicality and psychic expressions, which are smaller or subtler than atoms, electrons or protons; and in the psychic realm, may be subtler than ectoplasm or its extra-psychic coverage; endoplasm have been termed as "Microvita" (Singular- Microvitum) by Shri P. R .Sarkar.

Physicality : The position of microvita is just between ectoplasm and electron, but they are neither ectoplasm nor electron.

Categories :

A) Based on density or subtlety -

First : Coming within the scope of a highly developed microscope.

Second : Not coming within the scope of a perception but coming within the scope of perception as a result of their expression or actional vibration.

Third : Not coming within the scope of common perception but coming within the scope of a special type of perception which is actually the reflection of conception within the periphery of perception.

B) Based on nature -

1. Positive
2. Negative
3. Neutral/Ordinary

Movement :

- Move throughout the entire universe.
- Move unbarred, without caring for the atmospheric conditions.
- Move through a medium or media i.e. sound, form, figure, smell, tactuality or ideas.

Root cause of life :

Microvita create minds and bodies and also destroy minds and physical bodies. The root cause of life is not the unicellular protozoa or unit protoplasmic cell, but this unit microvitum.

BOOK-POST

To,

____

____

____

____

____

From :
Society for Microvita Research and Integrated Medicine (SMRIM)
28, Shivaji Nagar, UDAIPUR-313001 (Raj.) INDIA Mobile : 9414168910
E-mail : skvermaster@gmail.com, smrim08@gmail.com

AIMS AND OBJECTIVES OF SMRIM :

1. To propagate the knowledge and science of microvita by psycho-spiritual practice in individual and collective life.
2. To increase moral values, to generate scientific thinking, to remove dogma with the spread of knowledge of microvita at school, college and university levels.
3. To initiate and inspire about research on Yogic, Vaedic, Naturopathic, Ayurvedic and Homoeopathic schools of medicine.
4. To incorporate faculty of Physics, Chemistry, Botany and Medicine for research on microvita and integrated medicine; including research on medicinal plants and Homoeopathic medicine.
5. To organize free medical camps in villages and cities involving specialists of different system of medicine.
6. To publish result of the research in national and international journals and interact with other people working in the field in and out of the country.
7. To make judicious use of different systems of medicine and microvita for the treatment of diabetes, hypertension, heart diseases, cancer and diseases of modern era.
8. To establish laboratory and research centers for relentless research on microvita and integrated medicine for the welfare of entire humanity.

Who can join?

Any person interested in serving humanity through research on microvita and integrated medicine and abides rules and regulations of the society can become the member of the society.

Life Membership fee : Rs. 1500/- (Once)

Contact :
PRESIDENT SMRIM
28, Shivaji Nagar, UDAIPUR-313001 (Raj.) INDIA
Telephone : +91-9414168910, E-mail : skvermaster@gmail.com

"There should be extensive research work regarding this microvitum or these microvita. Our task is gigantic and we are to start our research work regarding these microvita immediately without any further delay, otherwise many problems in modern society will not be solved in a nice way".

- P. R. Sarkar

Published by : Society for Microvita Research and Integrated Medicine (SMRIM), Udaipur (Raj.) INDIA
Editor in Chief : Dr. S.K. Verma
Assoc. Editor : Dr. Vartika Jain
Printed at : National Printers, 124, Chetak Marg, Udaipur (Raj.)

FOR MEMBERS ONLY